

क्र. ४ - भावामी शंकर यांचा पत्रसंग्रह

१२ भाग

मराठी

क्र. ७ - २२

शालिहार

भवानीशंकर चाचा पत्रव्यवहार

वाराणसीकर काळे
देफतार



20

१)

२०

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

महाराष्ट्र राज्य सरकार

(2)

(13)

सकल जगत्पति गुरुदेव गुरुदेव

वन्दे गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

श्रीगुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव

(3)

गुरुचरित्र

उनेजा उनेघे खचे अथवा मोल
जे पडे छतं अथवा देउ अन मानन कन
णे बुहत काय लिहिणे हेतम स्कान
वेदवास्त्रसंपन्न नानेश्री आ पाभट
अफळे गारा साष्टांग नमस्कान
वेदमुनि जि श्री बाळें पयस नमस्कान
वेदवास्त्रसंपन्न नानेश्री रीं कनन
जी ससाष्टांग नमस्कान वचन बो
ले ल्या प्रमाणे स सक जणे पत्राह
माचा अथ मज्जे कार्य के ल्यास
उपकान हा यी छ हेतम स्कान

(4)



(26)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

(5)

श्रीमद्गोविन्द



CSA)

CSA)



(७)

श्री श्री महादेव ताम्रपत्र
महाराष्ट्र शासन
आचार्य दयाराम शास्त्री
रत्न चंद्रकांत
नीचे द्यावा



हस्ताक्षर

(७)

५

(४)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 रा ए नो विमर्शति ॥ २ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥



(१) श्रीमते।ची श्री
उफा वला

ଅନ୍ତରାଳ

तार

पुस्तक संख्या १०८५
पुस्तक नाम
पुस्तक लेखक
पुस्तक मालिक
पुस्तक स्थान
पुस्तक दिनांक
पुस्तक मूल्य
पुस्तक वर्ग
पुस्तक विवरण
पुस्तक चित्रण
पुस्तक विवरण

[Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
येनैवैतत्सर्वं कृतं तस्यैवैतत्सर्वं कृतं
इति श्रुत्वा तस्यैवैतत्सर्वं कृतं तस्यैवैतत्सर्वं कृतं

अग्निर्वायुः सूर्यः सावीत्रिंबलानां प्रजापति
उपाधिर्वायुः सूर्यः सावीत्रिंबलानां प्रजापति

(11)

५०

रसमिहारा रसमिहारा

रसमिहारा रसमिहारा

रसमिहारा रसमिहारा

रसमिहारा रसमिहारा

(12) २०० — ठाण्डिका

२००

ठाण्डिका ठाण्डिका ठाण्डिका
ठाण्डिका ठाण्डिका ठाण्डिका
ठाण्डिका ठाण्डिका ठाण्डिका
ठाण्डिका ठाण्डिका ठाण्डिका
ठाण्डिका ठाण्डिका ठाण्डिका

(13)

(13)
यद्यमेव यच्छास्त्रं गौतमोऽपि न जानाति
न विदुः श्रुतिं तस्मात्तस्मात्तस्मात्तस्मात्
न विदुः श्रुतिं तस्मात्तस्मात्तस्मात्तस्मात्

[illegible]

(16)

又

63

मामासमा
नमस्कार

नीर्थरूपअपावदि

लामेशवेरि—

वाळ के भवानी संन रा ने दो नी कर
जोड़ नि साष्टा नमस्का विनंती गपीर
भाव पाव धर अस नी पवि तो सम स
सुख रूप असे विरोष जे श्री मोरो
पंत व वा पुनी पंत उ भ य त पुण्या सगे
ले आहिक रु ले पा हि जे वि शेष नी
र्थ सरूप भाउ कु से नी स आ ले ते हि
भाव पाव ध पंच मी स म सुरा स
मले ते हि तु शा क डि अ से अस नी ल



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com